# विद्यासागर विश्वविद्यालय

**M. A. (हिंदी) पाठ्यक्रम**

# Vidyasagar University

Midnapore, Dist. Paschim Medinipur

Pin – 721102

M. A. (हिंदी) पाठ्यक्रम

(वर्ष 2018-2019)

Syllabus of M. A. (Hindi) in the semester System

Semester - I-IV

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

# Department of Hindi

## Programme Outcome of M.A. in Hindi

एम. ए. का यह दो वर्षीय पाठ्यक्रम चार सत्रों में विभाजित है। इसका उद्देश्य है कि इसके जरि विद्यार्थियों का रचनात्मक कौशल और आलोचनात्मक क्षमताओं को बढ़ाया जाए। एम. ए. हिंदी का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी भाषा और साहित्य की विस्तृत और ठोस जानकारी उपलब्ध कराना है, साथ ही वे साहित्य का आस्वादन और विश्लेषण-मूल्यांकन की अपनी क्षमता का विकास भी कर सकें। हमारा प्रयत्न यह भी है कि विद्यार्थी अपनी रूचि के किसी विशिष्ट क्षेत्र में विशेषज्ञता भी प्राप्त करें जो उनके लिए ज्ञान और रोजगार दोनों का मार्ग प्रशस्त करे। इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी प्राध्यापक, अध्यापक, अनुवादक, राजभाषा अधिकारी, दुभाषिये, संवाददाता, सिनेमा आदि क्षेत्रों में नौकरी प्राप्त कर सकते हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए दो वर्षीय पाठ्यक्रम को 20 पत्रों में विभाजित किया गया है।

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

# COURSE STRUCTURE OF M.A. IN HINDI

| SEMESTER | COURSE NO. | COURSE TITLES | | RULL MARKS | CREDIT |
|---|---|---|---|---|---|
| I | HIN 101 | HINDI SAHITYA KA ITIHAS : AADIKAL AUR MADHYAKAL | | 50 | 6 |
| | HIN 102 | MADHYAKALIN KAVYA | | 50 | 6 |
| | HIN 103 | HINDIA SAHITYA KA ITIHAS : ADHUNIK KAL | | 50 | 6 |
| | HIN 104 | ADHUNIK KAVYA-1 | | 50 | 6 |
| | HIN 105 | LOK SAHITYA | | 50 | 6 |
| | | **TOTAL** | | **250** | **30** |
| II | HIN 201 | ADHUNIK KAVYA-II | | 50 | 6 |
| | HIN 202 | BHASHA VIGYAN AUR HINDI BHASHA KA VIKAS | | 50 | 6 |
| | HIN 203 | SAHITYA SIDHANT | | 50 | 6 |
| | C-HIN 204 | HINDI SAHITYA KA ITIHAS (CBCS) | | 50 | 4 |
| | HIN 205 | HINDI ALOCHANA | | 50 | 6 |
| | | **TOTAL** | | **250** | **28** |
| III | HIN 301 | HINDI UPANAYAS | | 50 | 6 |
| | HIN 302 | HINDI NATAK | | 50 | 6 |
| | HIN 303 | ANUNIYOJIT KAVYA (PROJECT WORK) | | 50 | 6 |
| | C-HIN 304 | HINDI BHASHA AWAM PRAYOJAN MULAK HINDI (CBCS) | | 50 | 4 |
| | HIN 305 | HINDI KAHANI | | 50 | 6 |
| | | **TOTAL** | | **250** | **28** |
| IV | HIN 401 | HINDI GADYA KI VIVIDH VIDHAYEN | | 50 | 6 |
| | HIN 402 | HINDI PATRAKARITA | | 50 | 6 |
| | HIN 403 | ANUVAD VIGYAN | | 50 | 6 |
| | | **BISHESH ADHYAN PATRA** | | | |
| | HIN 404 | HIN 404 A | PREMCHAN | 50 | 6 |
| | | HIN 404 B | NIRALA | | |
| | HIN 405 | BHARTIYA SAHITYA | | 50 | 6 |
| | | **TOTAL** | | **250** | **30** |
| | | **ALL TOTAL** | | **1000** | **116** |

**MARKS = 50 END SEMESTER EXAMINATION (40) + INTERNAL ASSESSMENT (10)**

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

# सेमेस्टर - I

पत्र : HIN 101: हिंदी साहित्य का इतिहास: आदिकाल-मध्यकाल

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत हिंदी साहित्य के इतिहास पर प्रकाश डाला गया है। (मध्यकाल तक के)

1) किसी भी विद्यार्थी के लिए इतिहास का जानना जरूरी है।
2) विद्यार्थी हिंदी साहित्य के प्रथम तीन कालों के इतिहास को जानेंगे।
3) विद्यार्थी प्रयुक्त भाषा, प्रवृत्ति और युगबोध से स्वयं को समृद्ध करेंगे।

**हिंदी साहित्य का इतिहास : आदिकाल और मध्यकाल**

(क) साहित्येतिहास के सिद्धांत, साहित्येतिहास लेखन की परंपरा, साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएँ।

(ख) आदिकाल - परिस्थितियाँ और पृष्ठभूमि, नामकरण, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य, गद्य साहित्य।

(ग) पूर्व मध्यकाल - (भक्तिकाल) : भक्ति आंदोलन के उदय की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि। भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप। निर्गुण और सगुण काव्य धाराओं की विशेषताएँ, सूफी काव्य क विकास तथा सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति और लोक जीवन के तत्त्व।

(घ) उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल) : परिस्थितियाँ, काल, सीमा और नामकरण। दरबारी संस्कृति और लक्षण ग्रंथों की परंपरा। रीतिकालीन साहित्य की विविध धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त), रीति काव्य में लोक जीवन। रीतिकालीन ग‍ साहित्य। रीतिकालीन प्रमुख कवियों और कृतियों का सामान्य परिचय।

**पत्र : HIN 102 : मध्यकालीन काव्य**

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

प्रथम सत्र के द्वितीय पत्र के अन्तर्गत मध्यकालीन हिंदी कविता की परम्परा और इतिहास से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

1) विद्यार्थी इस युग के साहित्य में बदलते भाव के साथ भाषा के विकास की प्रवृत्ति को पहचान सकें।
2) हमारा प्रयत्न यह भी है कि विद्यार्थी उस क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता प्राप्त कर सकें।

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

3) आगे चलकर अगर वे चाहें तो मध्यकाल की रचनाओं या रचनाकारों पर शोधपरक कार्य कर सकते हैं।

**मध्यकालीन काव्य**

(क) विद्यापति : विद्यापति पदावली (सं.)कुमुद विद्यालंकार, जयवंशी झा। प्रकाशक : रीगल बुक डीपो, दिल्ली।

| | | |
|---|---|---|
| पद वंदना | - नंदक नंदन ............................ | (पद संख्या - 1) |
| नख-शिख | - पीन पयोधर दूबरी गाता ............. | (पद संख्या - 1) |
| प्रेम प्रसंग | - सजनी, भल कए पेखल ............. | (पद संख्या - 2) |
| | की लागि कौतुक ........................ | (पद संख्या - 11) |
| नोक-झोंक | - आई बै निपट साँझ ................... | (पद संख्या - 1) |
| बसंत | - नब बृंदाबन नब नब .................. | (पद संख्या - 3) |
| | बाजत द्रिगि द्रिगि ...................... | (पद संख्या - 11) |
| विरह | - माधब, तोहे जनु जाह विदेस ......... | (पद संख्या - 2) |
| | माधब हमर रटल ...................... | (पद संख्या - 11) |
| | सजनी, के कह आओब ............. | (पद संख्या - 18) |
| प्रार्थना और नचारी | - विदिता देवी ........................... | (पद संख्या - 1) |
| | बड़ सुख सार ......................... | (पद संख्या - 22) |
| | माधब, कत तोर करब .............. | (पद संख्या - 24) |
| | जतने जतेक धन ...................... | (पद संख्या - 27) |

(ख) कबीर : कबीर ग्रंथावली - (सं.) श्याम सुंदर दास (पद - 1, 6, 8, 11, 13, 16, 27, 39, 40, 43)

(ग) सूरदास : भ्रमरगीत-सार, (सं.) रामचंद्र शुक्ल (पद - 21, 23, 25, 34, 42, 62, 74, 76, 85)

(घ) तुलसीदास : रामचरित मानस (गीता प्रेस, गोरखपुर) रामराज्य वर्णन (दोहा - 20 से 30 एवं 36 से 41), कलि वर्णन (दोहा - 97 से 103)।

(ङ) मीराबाई : मीराबाई की पदावली (सं.) परशुराम चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग (पद - 1, 2, 14, 18, 19)।

(च) घनानंद : घनानंद कवित्त (सं.) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (पद -8, 14, 15, 16, 18, 19, 23, 29, 63, 69)

## पत्र : HIN 103- हिंदी साहित्य का आधुनिक काल

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत अपने विद्यार्थियों को आधुनिक युग की प्रमुख घटनाओं से परिचित करवाने का प्रयत्न है।

1) विद्यार्थी आधुनिक युग की सामाजिक, राजनीति, आर्थिक धार्मिक आदि क्षेत्रों में आए बदलावों के बारे में विस्तारपूर्वक जान सकें।

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

2) इस पत्र में आधुनिक की प्रमुख घटनाओं तथा साहित्य में उनकी अभिव्यक्ति को प्रमुख रूप में देखने का प्रयास है।

3) इसमें साहित्य की भाषा और विधाओं में आए बदलावों और वैशिष्ट्यों का विद्यार्थी समझ सकते हैं।

**हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक □□□**

(क) नवजागरण की अवधारणा, हिंदी नवजागरण, बंगाल का नवजागरण, नवजागरण की प्रवृतियाँ, सन् 1857 का स्वाधीनता-संग्राम और नवजागरण।

(ख) भारतेंदु और महावीर प्रसाद द्विवेदी युगीन गद्य और पद्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी कृतियाँ।

(ग) स्वच्छंदतावाद और छायावाद के उदय और विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। छायावाद के प्रमुख कवि और उनके काव्य

(घ) प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता : वैचारिक पृष्ठभूमि, मुख्य प्रवृत्तियाँ। प्रतिनिधि कवि और उनके काव्य

(ङ) हिंदी गद्य के विविध रूप : संक्षिप्त इतिहास : उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, नाटक, यात्रा-वृत्तांत, जीवनी, रिपोर्ताज।

## पत्र : HIN 104 : □□□□ काव्य - 1

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

पत्र दृष्टि आदि से जोड़ा जाए और उसे उनके -काव्य ,सौन्दर्य-काव्य ,है कि विद्यार्थियों को आधुनिक कविता के स्वरूप का उद्देश्य 104 अध्ययन का आधार बनाया जाए।

1) आधुनिक हिंदी कविता का पूरा काल कई आंदोलनों में बंटा है, उनपर विद्यार्थियों का नजरिया स्पष्ट हो, उसका ध्यान रखा गया है।

2) भारतेन्दु युग से लेकर स्वच्छंदतावाद के प्रमुख कवियों की कुछ कविताओं को इस पत्र में शामिल किया गया है ताकि आगे चलकर विद्यार्थी इन कवियों पर विशेषज्ञता प्राप्त कर सकें।

3) आधुनिक कविता और आधुनिक चेतना के अन्तसंबंध को विद्यार्थी समझ सकें।

**आधुनिक काव्य - 1**

(क) मैथिली शरण गुप्त - साकेत (नवम सर्ग)

(ख) जयशंकर प्रसाद - कामायनी (चिंता, श्रद्धा, आनंद)

(ग) सुमित्रानंदन पंत - नौका विहार, संध्या तारा, वाणी, ताज

(घ) सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला' - सरोज स्मृति, बादल-राग - 1, 2

(ङ) महादेवी वर्मा - यामा (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद)

गीत - पंथ होने दो अपरिचित, सब आँखों के आँसू उजले,

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

विरह का जलजात जीवन।

(च) रामधारी सिंह "दिनकर - उर्वशी (केवल तीसरा सर्ग)

## पत्र : HIN 105 : लोक साहित्य

लिखित - 40

कुल अंक : 50

आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत एम साहित्य और अन्य कलाओं से जुड़ने का अवसर देने ,संस्कृति ,के विद्यार्थियों को लोक साहित्य के इतिहास .ए . का प्रयत्न है ।

1) विद्यार्थियों को लोक को जानने-समझने का अवसर प्रदान करता है ।

2) मुख्यधारा के समाज के निर्माण की प्रक्रिया में लोक-साहित्य और समाज की क्या भूमिका रही है ? इन बिन्दुओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना ही इस पत्र का लक्ष्य है ।

3) विद्यार्थी इस पत्र के जरिए लोक-साहित्य में विशेष ज्ञान प्राप्त करेंगे ।

### लोक साहित्य

(क) लोक साहित्य की अवधारणा और स्वरूप, लोक साहित्य एवं संस्कृति

(ख) लोक साहित्य के तत्व, लोक साहित्य का सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व

(ग) लोक साहित्य संकलन : उद्देश्य, संकलन की पद्धतिय , लोक वार्ता एवं लोक साहित्य का संबंध

(घ) लोक साहित्य के विविध संप्रदाय

(ड.) लोककथा, लोकगीत, लोकनाट¬ : स्वरूप एवं विकास

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

# सेमेस्टर - II

**पत्र संख्या :** HIN 201 : □□□□ **काव्य** - 2

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत नई कविता के कवियों और काव्यगत प्रवृत्तियों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।-

1) आधुनिक हिंदी कविता के शीर्षस्थ कवियों की प्रतिनिधि कविताओं को पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।
2) हमारा प्रयत्न है कि विद्यार्थी आधुनिक हिंदी कविता में विशेषज्ञता अर्जित कर सकें।
3) आधुनिक काल के प्रमुख काव्यांदोलनों की विशेषताओं से परिचय पाने का अवसर है।

**आधुनिक काव्य - 2**

(क) अज्ञेय : आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय, सं. विद्यानिवास मिश्र

कविता : असाध्य वीणा, कलगी बाजरे की, सोन मछली

(ख) मुक्तिबोध : प्रतिनिधि कविताएँ, सं. अशोक वाजपेयी

कविता : ब्राह्मराक्षस

(ग) शमशेर बहादुर सिंह : प्रतिनिधि कविताएँ, सं. नामवर सिंह

कविता : काल तुझसे होड़ है मेरी, चुका भी हूँ मैं नहीं।

(घ) नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ, सं. नामवर सिंह

कविता : घिन तो नहीं आती है, प्रेत का बयान, बहुत दिनों के बाद, बादल को घिरते देखा है, कालिदास सच-सच बतलाना।

(ङ) रघुवीर सहाय : आत्महत्या के विरुद्ध

कविता : स्वाधीन व्यक्ति, मेरा प्रतिनिधि, अधिनायक, खड़ी स्त्री, नई हँसी, एक अधेड़ भारतीय आत्मा।

(च) धूमिल : संसद से सड़क तक

कविता : पटकथा

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

## पत्र संख्या : HIN 202 – भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का विकास

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत भाषा विज्ञान के सैद्यांतिक और व्यावहारिक पक्ष पर अध्ययन को रखा गया है।

1) भाषा विज्ञान की पढ़ाई एक स्वतंत्र विषय के रूप में तमाम विश्वविद्यालयों में होती है।
2) भाषा के व्याकरणिक पक्ष पर विद्यार्थियों की समझ विकसित हो, इसका विशेष ध्यान रखा गया है।
3) हमारा प्रयत्न यह भी है कि विद्यार्थी भाषा विज्ञान के मूलभूत सिद्धांतों के साथ हिंदी भाषा के विकास के अध्ययन में दक्षता अर्जित कर सकें। इसमें विश्व के भाषा-परिवारों वे ध्वनिगत और संरचनात्मक बिन्दुओं से भी विद्यार्थी अवगत होंगे।

### भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का विकास

(क) भाषा : परिभाषा, अभिलक्षण, भाषा के विविध रूप।

(ख) भाषा विज्ञान के अध्ययन की विविध पद्धतियाँ।

(ग) स्वन विज्ञान और स्वनिम विज्ञान।

(घ) रूप विज्ञान, अर्थ विज्ञान, वाक्य विज्ञान।

(ङ) हिंदी का ऐतिहासिक विकास :अपभ्रंश, अवहट्ठ, प्रारंभिक हिंदी का सामान्य परिचय। मध्यकालीन हिंदी भाषा की विशेषताएँ। मध्यकाल में अवधी और ब्राजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास। हिंदी की बोलियों का सामान्य परिचय।

(च) 19वीं सदी के अंतर्गत खड़ी बोली का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास। स्वाधीनता-संघर्ष के दौरान हिंदी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास। स्वतंत्र भारत में हिंदी का राजभाषा के रूप में विकास।

(छ) हिंदी भाषा का मानकीकरण।

## पत्र संख्या : HIN 203 – साहित्य सिद्धांत

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत साहित्य के विविध सिद्धांतों पर विस्तारपूर्वक चर्चा को केन्द्र में रखा गया है।

1) इस पत्र के जरिए विद्यार्थियों की काव्यशास्त्रीय कौशल को बढ़ाया जाएगा।
2) संस्कृत-साहित्य सिद्धांत के साथ पश्चिमी साहित्य सिद्धांत से परिचय का अवसर दिया गया है।

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

3) विद्यार्थी काव्यशास्त्र की मूल स्थापनाओं का रसास्वादन कर अपने कौशल को समृद्ध करें।

**साहित्य सिद्धांत**

(क) भारतीय काव्य शा : रस सिद्धांत, ध्वनि सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत , औचित्य सिद्धांत, अलंकार सिद्धांत, रीति सिद्धांत

(ख) पाश्चात्य काव्य शास्त्र : प्लेटो : अनुकृति सिद्धांत

अरस्तू : अनुकरण और विरेचन

कॉलरिज : कल्पना सिद्धांत

रिचड्स : मूल्य, संप्रेषण

टी. एस. इलियट : परंपरा की अवधारणा

लांजाइनस : औदात्य विवेचन

(ग) हिंदी आलोचना की पृष्ठभूमि, भारतेंदुयुगीन समीक्षा, द्विवेदीयुगीन समीक्षा, शुक्लयुगीन आलोचना, शुक्लोत्तरयुगीन समीक्षा।

(घ) रामचंद्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना-दृष्टि, नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध की आलोचना-दृष्टि

(ङ) उत्तर आधुनिकता : दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श

## **पत्र** : C-HIN 204 : हिंदी साहित्य का इतिहास (आदि, मध्य और आधुनिक काल)

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत अन्य विषयों में स्नातकोत्तर के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

1) इसके द्वारा विद्यार्थी हिंदी साहित्य के इतिहास से परिचित हो पाएंगे।
2) हिंदी साहित्य के प्रति विद्यार्थियों की अभिरूचि बढ़ाना ही इसका मुख्य उद्देश्य है।
3) साथ ही विद्यार्थी साहित्य की विविध विधाओं के बारे में दक्षता हासिल कर सकें और हिंदी साहित्य के इतिहास के जरिए हिंदी में पठन-पाठन कर सकें।

**हिंदी साहित्य का इतिहास**

(क) हिंदी साहित्य का काल-विभाजन एवं नामकरण

(ख) आदिकाल : परिस्थितियाँ एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ (सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य, रासो साहित्य, लौकिक साहित्य और गद्य साहित्य के विशेष संदर्भ में)।

(ग) मध्यकाल :(i) भक्ति काव्य

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

भक्ति आंदोलन : उदय एवं विकास तथा अखिल भारतीय स्वरूप।

(ii) अंतर्धाराएँ - निर्गुण (ज्ञान एवं प्रेममार्गी) एवं सगुण (कृष्णभक्ति एवं रामभक्ति) के विशेष संदर्भ में।

(iii) रीतिकाव्य : परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ (प्रमुख कवि एवं काव्यधाराओं के विविध संदर्भ में)

(घ) आधुनिक काल : भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता।

(ङ) हिंदी गद्य : विविध रूप : नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना - उद्भव -विकास।

## पत्र संख्या : HIN 205 – हिंदी आलोचना

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

हिंदी आलोचना पत्र के अन्तर्गत हिंदी आलोचना की पृष्ठभूमिविकास और उसकी सामान्य प्रवृत्तियों से विद्यार्थियों को ,परम्परा , परिचित होने का अवसर दिया गया है।

1) आलोचना के अध्ययन से विद्यार्थियों की आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास होगा।
2) इसके अन्तर्गत भारतेन्दु युग से लेकर उत्तर-आधुनिकता काल के सभी विमर्शों से विद्यार्थियों को अवगत कराने का प्रयास है।
3) इस पत्र के द्वारा विद्यार्थी रचनाओं की आलोचनात्मक-विश्लेषण की दक्षता अर्जित करेंगे।

### हिंदी आलोचना

(क) हिंदी आलोचना की पृष्ठभूमि, भारतेंदुयुगीन समीक्षा, द्विवेदीयुगीन समीक्षा, शुक्लयुगीन आलोचना, शुक्लोत्तरयुगीन समीक्षा।

(ख) रामचंद्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना-दृष्टि, नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध की आलोचना-दृष्टि

(ग) उत्तर आधुनिकता : दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

# सेमेस्टर – III

## पत्र संख्या : HIN 301 – हिंदी उपन्यास

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

पत्र के अन्तर्गत हिंदी साहित्य के लोकप्रिय उपन्यासों को पाठ्यक्रम में रखा गया है। 301

1) हमारा प्रयत्न है कि हिंदी उपन्यास के अध्ययन के जरिए विद्यार्थी हिंदी उपन्यास में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकें।
2) वे हिंदी उपन्यासों के क्रमिक विकास की प्रवृत्तियों से परिचित हो सकें।
3) इस पत्र में प्रेमचंद से लेकर काशीनाथ सिंह के उपन्यासों को रखा गया है यानी लगभग सौ वर्षों के हिंदी उपन्यासों की परम्परा का अध्ययन है यह पत्र।

**हिंदी उपन्यास :**

(क) गोदान - प्रेमचंद

(ख) बाणभट्ट की आत्मकथा - हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) मैला आँचल - फणीश्वरनाथ "रेणु'

(घ) धरती धन न अपना - जगदीश चंद्र

(ङ) रेहन पर रग्घू - काशीनाथ सिंह

## पत्र संख्या : HIN 302 – हिंदी नाटक

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

पत्र के जरिए विद्यार्थियों का नाटक संबंधी ज्ञान और आलोचनात्मक क्षमताओं को बढ़ाया जाए। 302

1) हमारा प्रयत्न यह भी है कि विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुरूप नाटक-विधा में विशेषज्ञता भी प्राप्त करें।
2) इससे उनके ज्ञान और रोजगार दोनों का मार्ग प्रशस्त होगा।
3) इसके अन्तर्गत हिंदी नाटक की पूरी परम्परा के आलोचनात्मक विश्लेषण का अवसर दिया गया है।

**हिंदी नाटक**

(क) अंधेर नगरी - भारतेंदु हरिश्चंद्र

(ख) स्कंदगुप्त - जयशंकर प्रसाद

(ग) आधे-अधूरे - मोहन राकेश

(घ) रीढ़ की हड्डी - जगदीशचंद्र माथुर

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

(ङ) ताँबे के कीड़े - भुवनेश्वर

(च) औरत - सफदर हाशमी

## पत्र : HIN 303 : प्रोजेक्ट वर्क (अनुनियोजित कार्य)

लिखित अधिनिबंध - 40

कुल अंक : 50

मौखिक एक वाह्य परीक्षक (external examiner) की उपस्थिति मेंट - 10

Course Outcome:

इस पत्र के द्वारा विद्यार्थियों के लेखन इसका ध्यान रखा गया है। ,दक्षता को बढ़ावा मिले-

1) इस पत्र के अन्तर्गत हिंदी साहित्य की विविध विधाओं आधुनिक कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि पर चिंतनपरक लेखन कर सकें।
2) रचनाकार विशेष (आधुनिक), प्रवृत्ति विशेष (आधुनिक), युग विशेष (आधुनिक), भाषा एवं साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन का प्रावधान है।
3) भाषा विज्ञान तथा भाषा के विकास के अध्ययन पर आधारित है।

**प्रोजेक्ट वर्क (अनुनियोजित कार्य)**

लिखित अधिनिबंध का विषय हिंदी साहित्य की विविध विधाओं (आधुनिक कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना आदि) पुस्तक विशेष की समीक्षा तथा रचनाकार विशेष (आधुनिक), प्रवृत्ति विशेष (आधुनिक), युग विशेष (आधुनिक), भाषा एवं साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, भाषा विज्ञान आदि पर आधारित होगा।

लिखित अधिनिबंध की शब्द सीमा लगभग 5000 (पांच हजार) होगी।

## पत्र संख्या : HIN 304 – हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिंदी (CBCS)

लिखित - 40

कुल अंक : 50

आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome :

इस पत्र के अन्तर्गत अन्य विषयों में स्नातकोत्तर के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

1) अन्य विषयों के साथ हिंदी का पठन-पाठन जोड़ा जा सके।
2) हिंदी भाषा, प्रयोजनमूलक हिंदी, हिंदी पत्रकारिता, मीडिया, अनुवाद को इस पत्र में प्रमुखता दी गई है।
3) विद्यार्थी इन विषयों का अध्ययन कर ज्ञान अर्जित कर सकें तथा स्वयं को रोजगार से जोड़ सकें।

**हिंदी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिंदी**

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

(क) हिंदी भाषा : उद्भव एवं विकास, हिंदी की बोलियाँ

(ख) प्रयोजनमूलक हिंदी : स्वरूप एवं प्रयोग क्षेत्र।

(ग) अनुवाद : परिभाषा एवं महत्त्व, प्रकार, क्षेत्र एवं समस्याएँ और व्यावहारिक अनुवाद।

(घ) हिंदी पत्रकारिता : उद्भव एवं विकास।

(ङ) मीडिया : स्वरूप, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, सोशल मीडिया।

## पत्र संख्या : HIN 305 – हिंदी कहानी

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

पत्र के अन्तर्गत हिंदी कहानी परम्परा की प्रतिनिधि कहानियों को शामिल किया गया है। 305

1) इस पत्र के जरिए विद्यार्थी लगभग सौ वर्ष की हिंदी कहानी परम्परा से परिचित होंगे।
2) हमारा प्रयत्न यह भी है कि विद्यार्थी हिंदी कहानी में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकें।
3) विद्यार्थी उच्च-शिक्षा, शोधपरक कार्यों और रोजगार से जुड़ सकें।

### हिंदी कहानी

(क) कफन - प्रेमचंद

(ख) उसने कहा था - चंद्रधर शर्मा गुलेरी

(ग) भेड़िये - भुवनेश्वर

(घ) तीसरी कसम - फणीश्वरनाथ रेणु

(ङ) शरणदाता - अज्ञेय

(च) पिता - ज्ञानरंजन

(छ) जिंदगी और जोंक - अमरकांत

(ज) चीफ़ की दावत - भीष्म साहनी

(झ) यही सच है - मन्नू भंडारी

(ञ) पार्टीशन - स्वयं प्रकाश

(ट) सागर सीमांत - संजीव

(ठ) सलाम - ओमप्रकाश वाल्मीकि

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

# सेमेस्टर – 4

## पत्र : HIN 401 : हिंदी गद्य की विविध विधाएँ

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत हिंदी साहित्य के गद्य रूप से विद्यार्थियों को परिचित कराने का प्रयास है।

1) इसमें गद्य साहित्य की विविध-विधाओं में रचित लोकप्रिय रचनाओं को संकलित किया गया है।
2) विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को समृद्ध करने का प्रयत्न है।
3) आधुनिक गद्य विधाओं में विशेषज्ञता अर्जित कर सकें।

### हिंदी गद्य की विविध विधाएँ

(क) मेरी जीवन-यात्रा (प्रथम खंड) : राहुल सांकृत्यायन

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम खंड | - दसवाँ अध्याय | - प्रथम उड़ान |
| द्वितीय खंड | - प्रथम अध्याय | - वैराग्य का भूत |
| तृतीय खंड | - नौवाँ अध्याय | - चित्रकूट की छाया में |
| चतुर्थ खंड | - द्वितीय अध्याय | - बाढ़ पीड़ितों की सेवा |
| | चतुर्थ अध्याय | - बक्सर जेल में छः मास |

(ख) रेखाचित्र - स्मृति की रेखाएँ : महादेवी वर्मा (भक्तिन, चीनी फेरीवाला, ठकुरी बाबा)

(ग) रिपोर्ताज - ऋणजल - धनजल : फणीश्वरनाथ रेणु

(घ) निबंध - चिंतामणि भाग - 1 रामचंद्र शुक्ल (क्रोध, काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था)

(ङ) व्यंग्य - वैष्णव की फिसलन : हरिशंकर परसाई

(वैष्णव की फिसलन, अकाल उत्सव, कबीर समारोह क्यों न‍ः )

## पत्र संख्या : HIN 402 : हिंदी पत्रकारिता

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

इस पत्र के अन्तर्गत पत्रकारिता के इतिहास और उसके स्वरूप से विद्यार्थियों का परिचय कराने का प्रयास है।

1) इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को पत्रकारिता के विविध रूपों, संपादन कला के सैद्यांतिक और व्यावहारिक पक्ष की ठोस जानकारी उपलब्ध कराना है।
2) विद्यार्थी पत्रकारिता के बदलते स्वरूप का अवलोक , विश्लेषण और मूल्यांकन कर अपनी क्षमता का विकास भी कर सकें।
3) मीडिया संबंधी रोजगार से जुड़ सकें।

**हिंदी पत्रकारिता**

(क) पत्रकारिता : स्वरूप, महत्त्व, इतिहास।

(ख) नवजागरणकालीन हिंदी पत्रकारिता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, स्वाधीनता आंदोलन काल की पत्रकारिता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता की प्रमुख विशेषताएँ।

(ग) पीत पत्रकारित , प्रतिष्ठानी पत्रकारिता, स्वतंत्र पत्रकारिता, खोजी पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता।

(घ) प्रिं मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया, समाचार के मूल तत्त्व, समाचार के प्रमुख स्रोत, लघु पत्रिका।

(ङ) संपादन कला : अर्थ और महत्त्व, अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य, प्रेस की आजादी।

## पत्र संख्या : HIN 403 – अनुवाद विज्ञान

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत अनुवाद के सैद्यांतिक और व्यावहारिक पक्ष पर अध्ययन को केन्द्र में रखा गया है।

1) अनुवाद विज्ञान की बढ़ती उपयोगिता से विद्यार्थियों को जोड़ना है।
2) एक स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाया जाना ताकि विशेष अध्ययन किया जा सके।
3) विद्यार्थियों की अनुवाद करने की क्षमता को विकसित करने का प्रयास भी किया जाता है।

**अनुवाद विज्ञान**

| | | |
|---|---|---|
| (क) अनुवाद | : | परिभाषा और महत्त्व।<br>प्रकार : शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, लिप्यंतरण, आशु अनुवाद। |
| (ख) अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि | : | अनुवाद के विभिन्न चरण, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा, अर्थान्तरण की प्रकिया, अनूदित पाठ का पुनर्गठन। |

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

(ग) अनुवाद के क्षेत्र और समस्याएँ : कार्यालयी अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद।

अनुवाद के उपकरण : कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कंप्यूटर।

(घ) अनुवाद व्यावहारिक : किसी अंग्रेजी सामग्री का हिंदी अनुवाद एवं किसी हिंदी सामग्री का अंग्रेजी अनुवाद।

## पत्र संख्या : HIN 404 : विशेष अध्ययन पत्र

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

यह पत्र विशेष अध्ययन पत्र है।

1) यह एक ऐच्छिक पत्र है। प्रथम ऐच्छिक पत्र (404 अ) प्रेमचंद पर तथा द्वितीय (404 आ) निराला पर केन्द्रित है।
2) प्रेमचंद और निराला हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक हैं, उनपर विशद् अध्ययन आवश्यक है।
3) हमारा प्रयत्न है कि विद्यार्थी अपनी इच्छा और रूचि के आधार पर किसी एक पर विशेष अध्ययन करें ताकि आगे चलकर इस विषय पर विशेषज्ञता हासिल कर शोधपरक कार्य करें।

**विशेष अध्ययन पत्र (अ)**

**प्रेमचंद**

(क) उपन्यास : रंगभूमि, ग़बन

(ख) कहानियाँ : ईदगाह, ठाकुर का कुआँ, मुक्तिमार्ग, सद्गति, सवा सेर गेहूँ, नमक का दारोगा, दो बैलों की कथा।

(ग) निबंध संग्रह : कुछ विचार (केवल साहित्य का उद्देश्य निबंध निर्धारित है।)

(घ) नाटक : कर्बला

**विशेष अध्ययन-पत्र (□)**

□□□□□□

(क) राग विराग : निम्नांकित कविताएँ निर्धारित हैं।

जुही की कली, जागो फिर एक बार-2, बादल राग-6, राम की शक्ति पूजा, स्नेह निर्झर बह गया, कुकुरमुत्त , राजे ने रखवाली की, जल्द-जल्द पैर बढ़ाओ, तोड़ती पत्थर, भारति जय-विजय करे।

(ख) उपन्यास : कुल्ली भाट, अप्सरा।

(ग) कहानियाँ : देवी, चतुरी चमार, भक्त और भगवान

(घ) निबंध : हिंदी कविता, साहित्य की प्रगति, हमारे साहित्य का ध्येय।

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf

## पत्र संख्या : HIN 405– भारतीय साहित्य

लिखित - 40

कुल अंक : 50 आभ्यंतरीण मूल्यांकन – 10

Course Outcome:

इस पत्र के अन्तर्गत भारतीय साहित्य को रखा गया है।

1) विद्यार्थी हिंदी साहित्य के अलावा भारतीय भाषाओं के साहित्य से परिचित हो सकें।
2) एक अखिल भारतीय समझ बन सकें।
3) इसके अन्तर्गत बांग्ला, ओड़िया, संथाली, उर्दू आदि के साहित्य का सामान्य परिचय तथा हिंदी साहित्य के साथ उनके संबंधों का अध्ययन किया जाता है। साथ भारतीय साहित्य के अध्ययन का यह उद्देश्य भी है कि विद्यार्थी जातीय एकता का अनुभव करें।

### भारतीय साहित्य

क) भारतीय साहित्य का स्वरूप एवं सामान्य परिचय
ख) बांग्ला साहित्य का उद्भव और विकास
ग) ओड़िया साहित्य का उद्भव और विकास
घ) संथाली साहित्य का उद्भव और विकास
ङ) उर्दू साहित्य का उद्भव और विकास
च) हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का अंत:संबंध

Downloaded from Vidyasagar University by 216.73.216.153 on 16 Jan 2026 : 10:04:46; Copyright : Vidyasagar University
http://www.vidyasagar.ac.in/Downloads/ShowPdf.aspx?file=/PG_Syllabus_CBCS_1819/POCO/Hindi_Syllabus_POCO_2018_19.pdf